Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

हिंदी साहित्य की शिक्षण प्रणाली में कृत्रिम मेधा के अवसर

यशोधरा दशरथराव नेत्रगांवकर*

शोधछात्रा

शोध सार

प्रारंभ से ही हिंदी साहित्य यह भारतीय संस्कृतिक का और सामाजिक चेतना का महत्वपूर्ण अंग रहा है। हिंदी साहित्य यह सदियों से समाज के विचारों, अनुभवो और मूल्यों को प्रतिबिंबित करता आया है। साहित्य यह केवल मनोरंजन का माध्यम नहि बल्कि विचारों, परंपराओं तथा सांसकृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति रहा है। इक्कीसवीं सदी में हिंदी साहित्य अनेक विधाओं से गुजर रहा है। आधुनिक वर्तमान युवा पीढ़ी साहित्य को अपने-अपने प्रासंगिकता के आधार पर टटोलने का एवं नये विचार एवं सांस्कृतिक मूल्य प्रस्थापित करणे का कार्य कर रही है। आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण तथा कृतिम मेधा (ए.आय.) के कारण हिंदी साहित्य को विभिन्न दिशाओं में विकसित होना पड रहा है। इस शोध पत्र में वर्तमान समय में हिंदी साहित्य में तकनीकी प्रभाव के कारण साहित्य का बदलता स्वरूप तकनीक का सकारात्मक प्रभाव तथा तकनीक का नकारात्मक प्रभाव इसका विश्लेषण किया गया है। जिसमें वर्तमान समय में तकनीक का उपयोग करते हुए हिंदी साहित्य में उभरती नई समस्याएँ, घटते पाठक एवं उसका समाधान शामिल है। शोध से यह स्पष्ट हो पाता है कि इक्कीसवीं सदी में भी हिंदी साहित्य के अर्तगत तकनीक का उपयोग करते हुए युवापीढ़ी को हिंदी में सृजन की अपार संभावनाए प्राप्त है। इंटरनेट, शोशल मिडिया, ई-बुक्स और पॉडकास्ट जैसे नए माध्यमों में युवा पीढ़ी को साहित्य सृजन के अनेक रास्ते खोल दिये है। वर्तमान समय में युवा लेखकों की साहित्य के क्षेत्र में बढ़ती भागिदारी एवं लेखन की प्रवृत्ती हिंदी साहित्य का उज्वल भविष्य सुनिश्चित करती है।

बीज शब्द: *युवा पीढ़ी, तकनीक, हिंदी साहित्य, आधुनिककरण, साहित्य सृजन।*

Received: 02/12/2025
Accepted: 17/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
यशोधरा दशरथराव नेत्रगांवकर
Email: yashodharasawate1977@gmail.com

प्रस्तावना:

हिंदी साहित्य मानवीय अभिव्यक्ति का एक रूप है। हिंदी साहित्य लिखित रचनाओं का एक समूह है ।हिंदी भाषा में लिखी गई वह सभी रचना साहित्यिक रचनाएं हैं। जिसमें कहानी, उपन्यास, नाटक निबंध, आलोचना शामिल है । जो कला, संस्कृति, समाज और मानवीय भावनाओं को दर्शाता है, इन्हें गद्य और पद्य दोनों रूपों में लिखा जाता है। जो हमें सोचने, महसूस करने और सीखने पर मजबूर करती है। यह हमारे इतिहास, एएचच संस्कृति और मूल्यों का आईना है। जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर को संजोने और बढ़ावा देने का माध्यम है।

वर्तमान युग सूचना, तकनीकी और डिजिटल नवाचारों का युग है। कृत्रिम मेधाने (Artificial Intelligence - AI) ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है ।भाषा और साहित्य जैसे मानवीय एवं सृजनात्मक क्षेत्र भी इससे अछूते नहीं रहे हैं । हिंदी साहित्य एवं भाषा के अध्ययन में AI का प्रयोग एक नवीन बहूविषयी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है । जिसमे भाषाविज्ञान ,साहित्य, कंप्यूटर विज्ञान, संचार अध्ययन और समाजशास्त्र का समन्वय दिखाई देता है। समय के साथ साथ हिंदी साहित्य शिक्षण प्रणाली मे बदलाव हो रहा है। परंपरागत अध्ययन पद्धतीने के साथ साथ डिजिटल और तकनीकी माध्यमो ने हिंदी भाषा एव साहित्य के अध्ययन को नया आयाम दिया है। कृत्रिम मेधा ऐसी तकनीक है जो मानव की बौद्धिक क्षमता जैसे सीखना ,विश्लेषण करना, निर्णय लेना, और सर्जन करना, जैसे कृतियो का अनुकरण करती हैं। कृत्रिम मेधा का प्रयोग भाषा प्रसंस्करण (नेचुरल Language Processing) मशीनी अनुवाद ,पाठ विश्लेषण, साहित्यिक डेटा के वर्गीकरण एवं सृजन में हो रहा है।

हिंदी साहित्य एवं कृत्रिम मेधा

ज्ञान या जानकारी के संबंधी मामले में किसी मशीन के मानवीय दिमाग की तरह काम करने की क्षमता को कृत्रिम मेधा कहा जाता है। मतलब महसूस करने या समजने , तर्कसंगत ढंग से सोचने ,सीखने, समस्याओं को हल करने और यहां तक रचनात्मकता का इस्तेमाल इसके दायरे में आता है ।यह एक कंप्यूटर जनित मेधा है ।आजकल इंटरनेट युग कंप्यूटर के माध्यम से हिंदी ब्लॉग बनाए जा रहे हैं। कंप्यूटर के सहारे सारे सामग्री का सॉफ्टवेयर अनुवाद उपलब्ध है। कृत्रिम मेधा के आगमन से यह भी एक सॉफ्टवेयर के सहारे कार्य करता है। कृत्रिम मेधा तकनीक का आधुनिक जन्म 1950 ई को माना जाता है।

कृत्रिम मेधा क्या है:

कृत्रिम मेधा का अध्ययन करने के लिए सबसे पहले आपको यह समझना होगा कि यह क्या है। जब आप कृत्रिम मेधा की बात करते हैं तो कई लोग चैटजीपीटी या उन अजीबोगरीब तस्वीरों के बारे में सोचते हैं जिसमें किसी के आठ उंगलियां दिखाई देती है, लेकिन यह उससे कहीं आधिक है। यदि आप कृत्रिम मेधा अध्ययन करने का निर्णय लेते हैं, तो निश्चित रूप से आप बहुत कुछ सीखेंगे। कृत्रिम मृदा के मूलभूत तत्वों में से एक मशीन लर्निंग है। मशीन लर्निंग मशीनों को डेटा से सीखने और बिना किसी विशेष प्रोग्रामिंग के अपने प्रदर्शन को बेहतर बनाने की बनाने में सक्षम बनाती है ।कृत्रिम मेधा का अध्ययन करने के इच्छुक छात्रों को मशीन लर्निंग के मूलभूत सिद्धांतों और अनु प्रयोगो के बारे में अवश्य जानना चाहिए। अक्सर जिसे हम कृत्रिम मेधा कहते हैं, वह वास्तव में मशीन लर्निंग का ही एक अनुप्रयोग होता है।

कृत्रिम मेधा की अवधारणा

कृत्रिम मेधा कंप्यूटर विज्ञान की वह शाखा है जिसमें ऐसी मशीने और सॉफ्टवेयर विकसित किए जाते हैं जो मानव बुद्धि की भांति कार्य कर सकते हैं इसमें प्रमुख रूप से निम्न घटक शामिल है

मशीन लर्निंग
डीप लर्निंग़
प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP)
वाक् पहचान (speech Recognition)
पाठ विश्लेषण (Text Analytics)
बहुविषय दृष्टिकोण:

बहुविषय की दृष्टिकोण का अर्थ है विभिन्न विषयों के ज्ञान पद्धतियों और दृष्टियों का समन्वय ।हिंदी भाषा एवं साहित्य में कृत्रिम मेधा का प्रयोग केवल साहित्य के अध्ययन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें

- भाषा विज्ञान
- कंप्यूटर विज्ञान
- सूचना
- प्रौद्योगिकी
- शिक्षा
- समाजशास्त्र
- सांस्कृतिक अध्ययन

सभी का योगदान दिखाई देता है। यही कारण है कि कृत्रिम मेधा पर आधारित हिंदी अध्ययन एक बहू विषय अध्ययन बन जाता है। हिंदी भाषा के

अध्ययन में कृत्रिम मेधा का योगदान

भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा:

कृत्रिम मेधा आधारित एप्लीकेशन और डिजिटल प्लेटफॉर्म हिंदी भाषा सीखने को सरल और प्रभावी बना रहा है। उच्चारण सुधार, व्याकरण अभ्यास, शब्द भंडार वृद्धि जैसे कार्य कृत्रिम मेधा के माध्यम से संभव हो रहे हैं। भाषा शिक्षण के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने नई दिशाएं और संभावनाएं उत्पन्न की है। कृत्रिम मेधा पर आधारित तकनीकी भाषा सीखने की प्रक्रिया को अधिक सरल, रोचक और प्रभाव बनती है। स्मार्ट एप्लीकेशन और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से विद्यार्थी अपनी गति और क्षमता के अनुसार भाषा का अभ्यास कर सकता है। उच्चारण सुधार ,व्याकरण अभ्यास ,शब्दावली विस्तार और सुनने बोलने की कौशल्या को विकसित करने में कृत्रिम मेधा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कृत्रिम मेधा पर आधारित टूल्स त्वरित प्रतिक्रिया और व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करते , जिससे शिक्षण अधिक विद्यार्थी केंद्रित बनता है। हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा के प्रयोग से मातृभाषा में शिक्षा को बढ़ावा मिलता है। तथा दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रो तक गुणवत्तापूर्ण भाषा शिक्षण पहुंचाया जा सकती है। यद्यपि शिक्षक की भूमिका समाप्त नहीं होती फिर भी कृत्रिम मेधा एक सहायक के रूप में भाषा शिक्षण को आधुनिक सुलभ और प्रभावशाली बनाने में सहायक बनता है।

हिंदी अनुवाद में कृत्रिम मेधा

मशीनी अनुवाद प्रणाली में हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहुंचने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।कृत्रिम मेंधा सेअनुवाद टूल्स विभिन्न भाषाओं से हिंदी और हिंदी से अन्य भाषाओं में त्वरित अनुवाद प्रदान करते हैं। हिंदी अनुवाद के क्षेत्र में कृत्रिम मेधा ने उल्लेखनीय परिवर्तन किए हैं ।कृत्रिम मेधा आधारित मशीन अनुवाद तकनीकी विभिन्न

भाषाओं से हिंदी तथा हिंदी से अन्य भाषाओं में त्वरित और सहज अनुवाद प्रदान करती है। इससे ज्ञान , साहित्य,सूचना और शैक्षणिक सामग्री की पहुंच व्यापक जनसमूह तक संभव हो सकती है । .अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा के प्रसार में भी कृत्रिम मेधा की महत्वपूर्ण भूमिका बन गई है। कृत्रिम मेधा अनुवाद प्रणालियों भाषा के व्याकरण वाक्य संरचना और शब्द प्रयोग का विश्लेषण कर अधिक सटीक अनुवाद प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। तकनीकी प्रशासनिक और शैक्षणिक क् क्षेत्रोंमे में इससे समय और श्रम की बचत होती है ।हालांकि साहित्यिक अनुवाद में भाव , सांस्कृतिक संदर्भ और संवेदना की पूर्ण अभिव्यक्ति अभी भी मानवीय हस्तक्षेप की अपेक्षा रखती है। फिर भी कृत्रिम मेधा अनुवाद को सरल तेज और सुलभ बनाकर हिंदी भाषा के विकास में सहायक सिद्ध हो रही है।

शब्दकोश और भाषा संसाधन:

कृत्रिम मेधा की साहयता से डिजिटल हिंदी शब्दकोश , कॉर्पस और भाषा संसाधनों का निर्माण संभव हुआ है । इससे शोधकर्ताओं को भाषा के प्रयोग और विकास को समझने में सहायता मिलती है । शब्दकोश और भाषा संसाधन भाषा अध्ययन के आधारशिला होते हैं ।कृत्रिम .बुद्धिमत्ता के प्रयोग से इनका , अदय तन और उपयोग पहले की अपेक्षा अधिक सरल और प्रभावी हो गया है ।कृत्रिम मेधा पर आधारित तकनीक के सहायता से डिजिटल हिंदी , थिसॉरस , कॉर्पस और भाषा डेटाबेस विकसित किया जा रहे हैं। जिनमें शब्दों के अर्थ प्रयोग उत्पत्ति और संदर्भों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जाता है। भाषा संसाधनों के माध्यम से शब्दों को प्रयोगात्मक आवृत्ति विविधता और भाषिक परिवर्तन का अध्ययन संभव हो सकता है ।इससे शोधकर्ताओ , शिक्षकों को और विद्यार्थियों को भाषा की विविधता और सूक्ष्मताओं को समझने में सहायता मिलती है। कृत्रिम मेधा स्वंयचलित रूप से नए शब्दों शब्दावली तकनीकी शब्दावली और प्रचलित प्रयोग को पहचान कर शब्दकोश में जोड़ सकता है। इस प्रकार कृत्रिम मेधा पर आधारित शब्दकोश और भाषा संसाधन हिंदी भाषा के संरक्षण विकास और वैश्विक उपयोग को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

हिंदी साहित्य के अध्ययन में कृत्रिम मेधा की भूमिका साहित्यिक विश्लेषण:

कृत्रिम मेधा के माध्यम से साहित्य संग्रह का विश्लेषण किया जा सकता है। विषय-वस्तु , शैली , कथा के आधार पर साहित्यिक प्रवृत्तियों का अध्ययन संभव हो रहा है ।साहित्यिक पाठों का विश्लेषण साहित्य अध्ययन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। जिसके माध्यम से किसी कथ्य , शिल्प , शैली रचन और भाव भूमि को समझा जाता है । यह विश्लेषण पाठकों को रचना के गुढ अर्थो तक पहुंचने में सहायता करता है । साहित्यिक पाठ केवल शब्दों का समूह नहीं होता बल्कि उसमें लेखक की अनुभूति संस्कृत और सामाजिक चेतना के संदर्भ निहित होते हैं। साहित्यिक विश्लेषण के अंतर्गत वस्तु विषय की पहचान की जाती है। तथा यह देखा जा सकता है कि लेखक ने किन मानवीय ,राजनीतिक या सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्त किया है । इसके साथ ही भाषा शैली और शिल्प का अध्ययन किया जा सकता है। जिसे लेखक की अभिव्यक्ति की वह विशेषता स्पष्ट होती है। ,बिंब, ,अलंकार , प्रतीक ,कथन और रचना शैली जैसे तत्वों को प्रभावशाली बना बनाते हैं ।जिसका विश्लेषण आवश्यक होता है । आधुनिक संदर्भ में साहित्यिक साहित्य का विश्लेषण केवल परंपरागत पद्धतियों तक सीमित नहीं रहा है। आज डिजिटल और तकनीकी साधनों की सहायता से भी पाठ विश्लेषण किया जा सकता है। जिससे बड़े साहित्यिक संग्रह का तुलनात्मक अध्ययन संभव हुआ है।इस प्रकार साहित्यिक पाठों का विश्लेषण पाठक की समझको गहरा बना सकता है और साहित्य की व्यापक सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्व को उजागर करता है।

हिंदी साहित्य आलोचना में कृत्रिम मेधा:

कृत्रिम मेधा साहित्यिक कृतियोंका विषयगत वर्गीकरण , प्रवृत्तिगत ,विश्लेषण और तुलना कर सकता है। जिससे आलोचना को एक वैज्ञानिक आधार प्राप्त होता है। साहित्य की आलोचना में कृत्रिम मेधा एक नवीन और महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभर रहा है। कृत्रिम मेधा साहित्य रचनाओं के विशाल पाठ्य संग्रह का विश्लेषण कर उसकी भाषा शैली और प्रवृत्तियों की पहचान करने में सक्षम है। इसके माध्यम से विभिन्न साहित्य कृतियों के बीच समानताओं और भिन्नताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है । जिससे आलोचकों को एक वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक आधार प्राप्त होता है ।कृत्रिम मेधा के आधारित पाठ विश्लेषण तकनीकी शब्द , भावनात्मक विश्लेषण और संरचनात्मक पैटर्न आवृत्ति की पहचान कर सकती है । इससे साहित्यिक आंदोलनो ,लेखक की प्रवृत्तियों और कालगत विशेषताओं को समझना सरल हो जाता है । कृत्रिम मेधा मानवीय संवेदना और अनुभूतियों का पूर्ण रूप से प्रतिस्थापन नहीं कर सकता फिर भी यह आलोचक के लिए एक सहायक उपकरण के रूपमें कार्य करता है । इस प्रकार साहित्य आलोचना में कृत्रिम मेधा का प्रयोग

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

आलोचनात्मक अध्ययन को अधिक तर्कसंगत , व्यापक और आधुनिक स्वरूप प्रदान करता है ।

साहित्य सृजन में कृत्रिम मेधा:

आज कृत्रिम कुत मेधा द्वारा कहानी

कविता , निबंध निर्माण किया जा रहा हैं। इस में मानवी अनुभूति का अभाव हो सकता है। फिर भी यह साहित्यिक सृजन के नए दिशा और संभावनाएं प्रस्तुत करता है ।साहित्य सृजन के क्षेत्र में कृत्रिम मेधा एक नवीन प्रयोग के रूप में सामने आया है ।आज कृत्रिम मेधा की सहायता से कविता कहानी निबंध और अन्य साहित्यिक विधाओं की रचना की जा रही है। यह तकनीक पूर्व उपलब्ध साहित्यिक पाठकों का विश्लेषण कर संरचना ,भाषा, शैली और अन्य प्रकारों का अनुकरण करती है ।जिससे नवीन रचनाएं संभव हो पाती है। कृत्रिम मेधा साहित्य सृजन की प्रक्रिया को तीव्र और विविधता पूर्ण बनती है। तथा नए विचारों और रूपों की संभावनाएं प्रस्तुत करता है।कृत्रिम मेधा द्वारा सृजन साहित्य में मानवीय संवेदना, अनुभूति और अनुभव की गहराई का अभाव दिखाई देता है ।फिर भी यह लेखक की रचनात्मकता का सहायक बन सकता है। कृत्रिम मेधा ने कथानक, प्रतीक और भाषिक प्रयोग को रचकर सृजन प्रक्रिया को समृद्ध करता है। इस प्रकार साहित्य सृजन में कृत्रिम मेधा मानव और तकनीक के सहयोग से विकसित होने वाली एक नई साहित्यिक दिशा का संकेत देता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य:

कृत्रिम मेधा के माध्यम से हिंदी भाषा एवं साहित्य समाज के व्यापक वर्ग तक पहुंच रहा है । दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में भी डिजिटल माध्यम से हिंदी साहित्य उपलब्ध हो रहा है ।इससे भाषा का लोकतंत्रीकरण संभव हुआ है ।डिजिटल मानवीकरण वह क्षेत्र है जहां मानवी विषयों का अध्ययन डिजिटल तकनीक की सहायता से किया जाता है। हिंदी साहित्य का डिजिटलीकरण, पांडुलिपियों का संरक्षण और ऑनलाइन अभी लेखागार कृत्रिम मेधा के माध्यम से संभव हो रहा है।

नैतिक प्रश्न और चुनौतियां,

कौन से भी क्षेत्र में जहां अवसर प्रदान होते हैं वहां पर चुनौतियां भी उपस्थित होती है। वैसे ही कृत्रिम मेधा में जहां अनेक अवसर प्रदान करता है वहां कुछ चुनौतियां भी उपस्थित करता है ।

बौद्धिक संपदा अधिकार

भाषा के सांस्कृतिक बारीकियां की अपेक्षा

साहित्यिक मौलिकता का प्रश्न

मानवीय संवेदना का अभाव

भविष्य में कृत्रिम मेधा और हिंदी साहित्य का संबंध और भी गहरा होगा। मानव और मशीन के सहयोग से साहित्य सृजन अध्ययन और संरक्षण के नए आयाम विकसित होंगे।हिंदी भाषा को वैश्विक मंच पर स्थापित करने में सहायक सिद्ध हो सकती है ।कृत्रिम मेधा के निरंतर विकास ने साहित्य के क्षेत्र में भी नई संभावनाओं के द्वारा द्वारा खोल दिए हैं। कृत्रिम मेधा के निरंतर विकास ने साहित्य के क्षेत्र में भी नई दिशाएं दिखाई है। परंपरागत रूप से साहित्य को मानवीय अनुभूति संवेदना और कल्पनाशीलता का क्षेत्र माना जाता है। किंतु आधुनिक कृत्रिम मेधा और तकनीक की मशीन ने यह सिद्ध कर दिया है की साहित्यिक अध्ययन सृजन विश्लेषण और लेखन में भी कृत्रिम मेधा एक प्रभावी सहायक भूमिका निभा सकता है। भविष्य में कृत्रिम मेधा और साहित्य का संबंध और अधिक गहरा होने की संभावना है ।भविष्य में साहित्यिक पाठकों के अध्ययन और विश्लेषण में कृत्रिम मेधा की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होगी विशाल साहित्यिक संग्रहों का डिजिटल रूप में संरक्षण और उनका त्वरित विश्लेषण कृत्रिम मेधा के माध्यम से संभव होगा।साहित्य का आलोचना के वस्तुनिष्ठ और व्यापकता मिलेगी जिसमें शोध की गुणवत्ता में वृद्धि होगी।इससे।विभिन्न कालों, आंदोलन और प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन अधिक वैज्ञानिक और व्यवस्थित ढंग से किया जा सकता है।साहित्य सृजन के क्षेत्र में भी कृत्रिम मेधा भविष्य में नए प्रयोगों का जन्म देगा। मानो लेखक और कृत्रिम मेधा के सहयोग से नवीन कथानक, प्रतीक ,भाषा शैली और रचनात्मक संरचना विकसित होगी। कृत्रिम मेधा लेखन, भाषिक विकल्प, विचारों, संदर्भ और सृजन प्रक्रिया को अधिक समृद्ध बनाएगा।साहित्य की आत्मा मानवीय संवेदना में निहित रहेगी फिर भी कृत्रिम मेधा रचनात्मकताका एक सहायक उपकरण बनकर उभर कर आएगा। भविष्य में साहित्य का प्रसार और पाठक वर्ग की भी कृत्रिम मेधा के प्रभाव से विस्तृत होगा। व्यक्ति रुचि के अनुसार पाठक ऑडियो बुक,सुझाव अनुवाद और डिजिटल मंचों के माध्यम से साहित्य अधिक सुलभ बनेगा ।क्षेत्रीय और लोक साहित्य के वैश्विक स्तर पर पहचान मिलेगी । जिससे सांस्कृतिक विविधता को संरक्षण प्राप्त होगा । हालांकि कृत्रिम मेधा के बढ़ते प्रभाव से कुछ चुनौतियां भी उत्पन्न होगी । साहित्य की मौलिकता लेखकत्व की मानवीय अनुभूतियों से जुड़े प्रश्न भविष्य में अधिक चर्चा का विषय बनेंगे । यदि कृत्रिम मेधा का अत्यधिक या अनियंत्रित उपयोग किया गया तो साहित्य के मानवीय पक्ष को हानि पहुंच सकती है ।अंतत भविष्य में साहित्य के क्षेत्र में कृत्रिम मेधा के संभावनाएँ तभी सार्थक होगी जब उसका उपयोग संतुलित और नियंत्रित रूप से नैतिक दृष्टि से किया

जाएगा। मानव सृजनात्मकता और कृत्रिम मेधा के तकनीकी सहयोग से साहित्य एक नए युग में प्रवेश करेगा। जहां परंपरा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय देखने को मिलेगा ।कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य के अध्ययन में एक बहू विशेष दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष:

कृत्रिम .मेधा हिंदी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन में एक बहूविषय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है ।यह केवल अध्ययन को विकसित करती है बल्कि वह वैज्ञानिक और वैज्ञानिक तर्क शुद्धता को व्यापक बनती है ।साहित्य को नये पाठकों और शोधकर्ताओं तक पहुंचाने में भी सहायक है ।भारत जैसे देश में कृत्रिम मेधा के लिए जबरदस्त संभावनाएं हैं। हमारा देश डाटा के मामले में संपन्न होने के साथ ही अपनी कई समस्याओं का कृत्रिम मेधा के जरिए समाधानके लिए जरूरी क्षमता रखता है तमिलनाडु जैसे राज्य में स्वास्थ्य , शिक्षा और कृषि के क्षेत्र में कुछ प्रमुख चुनौतियों को निपटने के लिए बड़े पैमाने पर कृत्रिम मेधा प्रणाली का प्रयोग शुरू कर दिया गया है।

संदर्भ ग्रंथ:

1) Moretti,Franco (2013) Distant Reading.Verso Books पृ
2) सिंह नामवर (2005) आलोचना और विचारधारा, राजकमल प्रकाशन पृ
3) शुक्ल, रामचंद्र (1929) हिंदी साहित्य का इतिहास काशी नागरी प्रचारिणी सभा पृ
4) चतुर्वेदी, रामस्वरूप हिंदी साहित्य का इतिहास लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज पृ
5) Digital Humanities Quarterly विभिन्न शोध लेख पृ
6) भारतीय भाषा संस्थान डिजिटल युग में भारतीय भाषाएं पृ

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)